SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' में नारी–चेतना का स्वर

तिजेश्वर प्रसाद टण्डन, (Ph.D.) हिंदी विभाग
शासकीय पं. माधवराव सप्रे महाविद्यालय, पेण्ड्रारोड़, गौरेला–पेण्ड्रा–मरवाही, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
तिजेश्वर प्रसाद टण्डन, (Ph.D.) अतिथि व्याख्याता, शासकीय पं. माधवराव सप्रे महाविद्यालय, पेण्ड्रारोड़, गौरेला–पेण्ड्रा–मरवाही, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 06/10/2020
Revised on : -----
Accepted on : 13/10/2020
Plagiarism : 01% on 06/10/2020

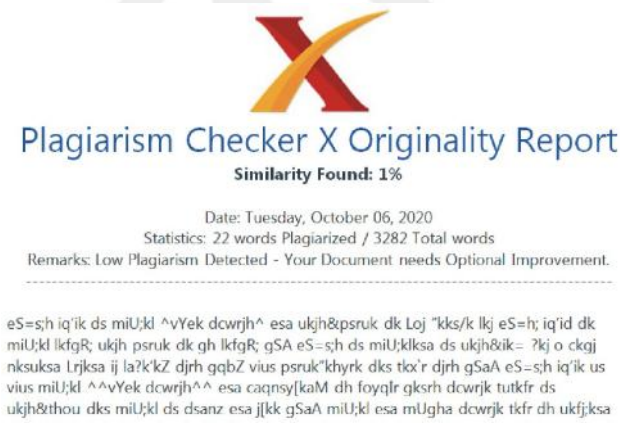
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Tuesday, October 06, 2020
Statistics: 22 words Plagiarized / 3282 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

eS=s;h iq'ik ds miU;kl ^vYek dcwrjh^ esa ukjh&psruk dk Loj "kks/k lkj eS=h; iq'id dk miU;kl lkfgR; ukjh psruk dk gh lkfgR; gSA eS=s;h ds miU;klksa ds ukjh&ik= ?kj o ckgj nksuksa Lrjksa ij la?k'kZ djrh gqbZ vius psruk"khyrk dks tkx'r djrh gSaA eS=s;h iq'ik us vius miU;kl ^^vYek dcwrjh^^ esa caqnsy[kaM dh foyqlr gksrh dcwrjk tutkfr ds ukjh&thou dks miU;kl ds dsanz esa j[kk gSaA miU;kl esa mUgha dcwrjk tkfr dh ukfj;ksa

शोध सार

मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास साहित्य नारी चेतना का ही साहित्य है। मैत्रेयी के उपन्यासों के नारी–पात्र घर व बाहर दोनों स्तरों पर संघर्ष करती हुई अपने चेतनाशीलता को जागृत करती हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास ''अल्मा कबूतरी'' में बुंदेलखंड की विलुप्त होती कबूतरा जनजाति के नारी–जीवन को उपन्यास के केंद्र में रखा हैं। उपन्यास में उन्हीं कबूतरा जाति की नारियों के संघर्षपूर्ण जीवन को रेखांकित किया है।

मुख्य शब्द

अल्मा कबूतरी, जनजाति, सभ्य समाज, मानव जाति।

कबूतरा जाति बुंदेलखंड में अपराधी जनजाति के नाम से ही जानी जाती हैं। कबूतरा जाति का मानव–समूह ''सभ्य समाज'' के जमीन, स्थान पर बसा हुआ पाया जाता हैं। इसे सभ्य समाज अर्थात् कज्जा लोग अपने समाज का हिस्सा नहीं मानते। ''अल्मा कबूतरी'' कबूतरा जनजाति की नारियों की तीन पीढ़ियों के संघर्ष –गाथा है। पहली पीढ़ी भूरीबाई, दूसरी पीढ़ी कदमबाई और तीसरी पीढ़ी अल्मा कबूतरी है। तीनों पीढ़ी की नारियों के संघर्षमय जीवन को इस उपन्यास में चेतनाशीलता के साथ चित्रित किया गया है।

''जीती आई हूँ, अबला बनकर अब सबला भी बन लेने दो।
जीती रही हूँ, मैं सबके लिए अब अपने लिए कुछ करने दो।।''

वर्तमान दौर में नारी–विमर्श के स्तर पर नारी–चेतन से संपन्न हिंदी उपन्यास लिखे जा रहे हैं, जिनमें नारी की आत्मा, स्व और अहं ध्वनित हैं। नारियों की परिस्थितियों एवं समस्याओं के संदर्भ में लेखन–कार्य किया जा रहा है तथा इस संदर्भ में काफी विस्तारपूर्वक चर्चा की जा रहीं है। 21वीं सदी की नारी–चेतना व उसके अस्तित्व को जहाँ बल प्रदान करती है, वहीं उसकी अस्मिता को एक

पहचान भी देती है। नारी ने आज पितृसत्तात्मक समाज की सदियों से चली आ रहीं रूढ़िवादी परंपरा एवं विचारधारा को पीछे छोड़कर अपने नए पथ पर अग्रसर हो रही है। आज नारी समाज को समृद्ध व विकसित करने के लिए पुरूषों के साथ कंधे–से–कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है और अपने जीवन में स्वतंत्र व आत्मनिर्भर होकर अपने पहचान तथा अस्मिता को जागृत कर रही है।

नारी–चेतना नारी के अस्तित्व, अस्मिता व उसके संघर्ष से जुड़ा एहसास है। नारी अपनी चेतना, जागृति को विविध आयामों, जैसे – सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि आयामों में दबी हुई नारी अपने जीवन में बदलाव कर सचेत होकर चेतनाशील बन रही है। नारी–चेतना का अर्थ पुरूषों का विरोध करना नहीं, बल्कि एक ऐसे समाज की स्थापना पर बल देना है जो समाज मनुष्य–जीवन के सभी पक्षों का उचित समायोजन कर सके और समाज में व्याप्त रूढ़िवादी परंपराओं व सामंतवादी सोच का विरोध कर पाने में सक्षम हो। ''दरअसल नारी–चेतना की मुहिम स्वयं स्त्री के लिए अपने अस्तित्व से मानवीय रूप में अनुभव करने और करवाने का आंदोलन है कि मैं भी मनुष्य हूँ।''[1] सदियों से नारी, समाज में व्याप्त रूढ़िवादी विचारधारा, उपदशों, शोषण एवं अत्याचारों को सहती हुई आई है, किंतु आज नारी अपने हक व अधिकार के प्रति सचेत व जागरूक होकर अपने अस्तित्व को पहचानने लगी है। अपने अस्मिता व अस्तित्व की पहचान होने से आज की नारी चाहे वह ग्रामीण परिवेश की हो या शहरी व महानगरीय, चाहे वह शिक्षित हो या कम पढ़ी–लिखी अथवा अनपढ़, उसके सोच व विचारों में तीव्र परिवर्तन हुआ है। नारी स्वयं के सामर्थ्य व वजूद को पहचानने लगी है।

नारियों में चेतना–शक्ति का विकास होना जिससे वे अपने भले–बुरे का ज्ञान प्राप्त करते हैं। ''वास्तव में नारी–चेतना गहरे रूप में नारी–अस्मिता बनाए रखने हेतु वह कड़ा संघर्ष करती है। चेतना नारी को अपना अंत और बाह्य चीजों व घटनाओं को समझने की समझ देती हैं। अपने हित व अहित के प्रति उसे जागरूक व चेतनाशील बनाती है।''[2]

आज की नारी अपने हक व अधिकार को जान–समझ कर अपने अस्तित्व की पहचान बना रही है। नारी का विरोध पुरूष से होकर पुरूष सत्तात्मक समाज के रूढ़िवादी परंपरा से है। उसी परंपरा को नारी आज खंडन–मंडन कर संघर्ष करती हुई दिखाई दे रहीं है। वह जीवन में कठिन परिस्थितियों से संघर्ष करती हुई अपने विरूद्ध अन्याय के खिलाफ जागृत होकर नारी–चेतना को स्वर दे रही है। वर्तमान में परिदृश्य बदल रहा है, आज की नारी चाहे गाँवों या शहरें में रहने वाली क्यों न हों, परंतु वह अपने अस्तित्व के प्रति शिक्षा के माध्यम से परंपरा व अंधविश्वासों के बंधन व मायाजाल से मुक्त होकर अपने–आप को स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रदान करना चाहती है। ''नारी–चेतना का संबंध निजी जीवन–दृष्टि से होता है जिसके द्वारा इतिहास, संस्कृति और मानवीय संबंधों को पुनः विश्लेषित किया जाता है। हम कह सकते हैं कि जो दृष्टि नारी की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक दृष्टि के तिलिस्म को तोड़े वह नारी–चेतना है।''[3] यही नारी–चेतना मैत्रीय पुष्पा के उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' में दिखाई देता है। मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास साहित्य नारी–चेतना का ही साहित्य है। मैत्रेयी के उपन्यासों के नारी–पात्र घर व बाहर दोनों स्तरों पर संघर्ष करती हुई अपनी चेतनाशीलता को जागृत करती है। मैत्रेयी ने अपने उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' में बुंदेलखंड की विलप्त होती कबूतरा जनजाति के नारी–जीवन को उपन्यास के केंद्र में रखा है। उपन्यास में उन्ही कबूतरा जाति की नारियों के संघर्षपूर्ण जीवन को रेखांकित किया है।

कबूतर जाति बुंदेलखंड में अपराधी जनजाति के नाम से ही जानी जाती है। कबूतरा जाति का मानव–समूह 'सभ्य समाज' के जमीन, स्थान पर बसा हुआ पाया जाता है। इसे सभ्य समाज अर्थात् कज्जा लोग अपने समाज का हिस्सा नहीं मानते।

'अल्मा कबूतरी' कबूतरा जनजाति की नारियों की तीन पीढ़ियों के संघर्ष–गाथा है। पहली पीढ़ी भूरीबाई, दूसरी पीढ़ी कदम बाई और तीसरी पीढ़ी अल्मा कबूतरी है। तीनों पीढ़ी की नारियों के संघर्षमय जीवन को इस उपन्यास में चेतनाशीलता के साथ चित्रित किया गया है। पहली पीढ़ी की नारी–पात्र भूरी एक विद्रोही नारी के रूप में ही नज़र आती है। भूरी कबूतरा जाति की साहसिक व हिम्मतवाली नारी है, वह अपने हाथों की लकीरों पर कम

स्वयं के कर्म पर ज़्यादा विश्वास रखती है। भूरी का यह मानना है कि हाथ की लकीरों को देखने से कुछ होने वाला नहीं है। वह कहती है, खींचों तो पत्थर की लकीर, मिटाने से भी न मिटे।

भूरी बाल्यावस्था से ही अपनी दादी से राजा–महाराजाओं के किस्से–कहानी सुना करती है और अपने–आप को उन्हीं राजा–महाराजाओं को समान समझती है। देश की आजादी के बाद वह अपने देश के राजा को देखने की जिज्ञासु होती है। वह अपने पति वीरसिंह के साथ कबूतराओं का रूप धारण करके कज्जा अर्थात् सभ्य लोगों की भाँति कपड़े पहनकर झाँसी के राजा के दरबार में राजा को देखने पहुँच जाती है। झाँसी में सिपाही की नज़रों से छिपकर वह राजा के दर्शन करती है।

भूरीबाई झाँसी राज्य के जन–समुदाय की भीड़ में राजा का भाषण सुनती है। राजा के सभी जाति–समुदाय को समान स्थान, समान हक, समान नागरिकता देने वाले भाषण को सुनकर उत्साहित व जाकरूक होती है और अपने कबूतरा समाज की जीवन–शैली, रहन–सहन, विचारधारा में परिवर्तन लाने का सोचती है, लेकिन उसके जात –बिरादरी के लोग उसके इस तरह की विचारधारा और विचारशील बातों को सुनकर भूरीबाई की खूब हँसी उड़ाते है। भूरी का पति उन्ही विचारधारा से उत्तेजित व जागरूक होकर पलटन में भर्ती होने जाता है, किन्तु पुलिस उसे हथियार चुराने आया है कहकर गिरफ्तार कर लेती है और अपनी बात सही साबित न कर सके इसलिए वीरसिंह को कचहरी के सामने गोली मार दी जाती है।

भूरी पति के मृत होने पर आँसू नही बहाती, वह रोने के भाव को कमजोरी का लक्षण मानती है। वह कमजोर नारी नही बनना चाहती। भूरी अपने पति वीर सिंह की अमानत चार महिने के अपने बेटे रामसिंह को अपने गोद में लिए हुए दृढ़ निश्चय से संकल्प करती हुई कहती है – 'कौल भर रही थी पति वीरता लुगाई अपने आदमी संग सती होती है। मै अपने मर्द की ब्याहता खुद को तब मानूँगी जब रामसिंह को पढ़ा – लिखाकर इसी कचहरी के दरवाजे पर खड़ा कर दूँगी। भले ही इस सफर में मुझे दस मर्दो में नीचे से गुजरना पड़े।' इस तरह भूरी कृतसंकल्प होकर रामसिंह को पढ़ा–लिखाकर शिक्षित बनाने माते, पुजारी, सिपाही, मास्टरो के जरिये रामसिंह के लिए इज्जत व विद्याध्ययन के लिए बेहिचक बेइज्जत होना स्वीकार करती है। भूरी अपनी बिरादरी की अकेली नारी होती है जो अपने बेटे को चोरी, डाका, गुलेल, कुल्हाड़ी व डंडा न थमाकर पुस्तक पोथी देती है। भूरी अपना जीवन व शरीर बेटे को पढ़ाने के लिए कुर्बान कर देती है। वह कहती है जिस दिन रामसिंह ने बाप को लाल खून स्याही में बदलकर अपने हक में अंक लिख लिए, समझूँगी मुझमें राई भर कलंक नही। विद्या रतन के आगे देह का खजाना कुछ भी नही है। इस तरह भूरी रामसिंह को पढ़ाने के लिए बिरादरी व समाज के सभी रिती–परंपरा का खंडन– मंडन करती है। वह पंचायत द्वारा जात–बिरादरी से वंचित हो जाती है। किन्तु किसी पंचायत को नही मानती, जो विद्याध्ययन के मार्ग में बाधा बने। भूरी जानती व समझती है कि विद्या का दामन थामकर अब उसे बेबसी, शोषण व अत्याचार से भी गुजरना होगा। वह रामसिंह को अच्छे संस्कार देकर योग्य व्यक्ति बनाती है। रामसिंह कबूतरा जनजाति का एकमात्र पढ़ा–लिखा शिक्षक बन जाता है। इसका श्रेय भूरी में जागरूकता व चेतनशीलता को उजागर करता है।

अल्मा कबूतरी उपन्यास में दूसरी पीढ़ी की नारी–पात्र कदमबाई कबूतरा जनजाति की नारी है। उसकी शादी कबूतरा जाति के जंगलिया से होता है, जो बिरादरी व क्षेत्र में नामी चोर माना जाता है, किन्तु धोखे से पुलिस उसे मार देती है। पति के मृत्यु के बाद कदमबाई एक बेटे को जन्म देती है।

उपन्यास में भूरीबाई के बाद नायिका का प्रतिनिधित्व कदमबाई करती दिखती है। वे अपने को महाराणा प्रताप का वंशज मानते है, इसलिए कदमबाई अपने बेटे का नाम राणा रखती है। कदमबाई कबूतरा जाति की नारी होने के साथ–साथ उसमे हिम्मत व आत्मविश्वास है। वह अपने बेटे को पति जंगलिया के जैसे निडर व निर्भिक बनाना चाहती है। पिछली पीढ़ी भूरीबाई अपने बेटे रामसिंह को पढ़ा–लिखाकर योग्य शिक्षित व्यक्ति बनाना चाहती है, लेकिन कदमबाई की सोंच समाज व जाति में हिम्मत व बहादूरी के साथ होना मानती है। इसलिए कदमबाई अपने बेटे राणा को भी अपनी बिरादरी में सबसे हिम्मतवाला चोर बनाना चाहती है। राणा जब सात वर्ष का होता है तो कदमबाई कुल्हाडी, गुलेल, लाठी चलाना सिखाती है। कदम अपनी हिम्मत व साहस से जीवन में संघर्ष करती हुई

विधवा नारी का जीवन – निवर्हन करती है। समाज व जात – बिरादरी में नारी का विधवा जीवन कितना कष्टप्रद होता है यह नारी स्वयं जानती है, जो समाज घुमंतू जनजातियो में बिना पति के जीवन व्यतीत करती है। कदमबाई संघर्ष करती हुई, सामाजिक बंधनो को तोडती हुई स्वतंत्र जीवन निवर्हन करती है। वह पुलिस व ठेकेदारो के शोषण व अत्याचार से बहादुरी के साथ मुकाबला करती है। कदमबाई राणा की बात–बात पर मार्गदर्शन व हौसला बढाती है। वह कहती है–देखता नही पुलिस पीटने आ जाती है ठेकेवाले बेबात में हमे खदेड़ते है। पर बेटा हम भी कम नही, भूखे–प्यासे भी तोप खाने लूटने से बाज नही आते। लेकिन राणा तो कदमबाई जैसे बहादुर नारी का बेटा होकर भी सीधा–साधा है। वह लूटपाट करना, चोरी व गुलेल से चिड़ियो को मारना गुनाह मानता है। वह गाँव के सभ्य लोगो के हम उम्र के बच्चों से दोस्ती करता है। राणा मंसाराम के बेटे से दोस्ती करता है, किन्तु कदमबाई राणा को मंसाराम जैसे लोगो की चालाकी व असलियत बताती है – ये जुग–जुग के दगाबाज राणा तू इनकी संगत करके अपने धंधे की ईमानदारी से जाएगा। तू यह न समझना की हम इनसे मिलकर कज्जा हो जाएँगे। हम तो इनकी बोली–बानी बोलते हुए भी इनसे अलग है। इनकी रोटी और हमारी टुक्क अलग नही पर भूख प्यास की कीमत अलग है। माँ ने राणा को समझा–बुझा दिया और मंसाराम का बेटा करन खेतो पर उस ओर देखना नही और बुलाए तो जाना नही। हम इनके कारण ही आज दरबदर है। ये गद्दार लोग है बेटा। भूरी कबूतरी रिश्ते में दादी लगती थी, आज होती तो तूझे समझाती कि कैसे पूराने जमाने मे इन्होने राधा प्रताप सिंह के साथ कपटपूर्ण छल किया था। कैसे इन भीतरघातियों और धोखेबाजो के कारण झाँसी की रानी मारी गई थी।

कदमबाई राणा को कहती है कि मै तुझे लडने की विद्या सिखाऊँगी। राणा खेतो के बीच में जब गुलेल चलाता है तो फसलो को चीरता हुआ पत्थर सनसनाकर निकल जाता है। कदमबाई दोनो हाथो से कुल्हाड़ी व लाठियाँ घुमाना सिखाती है। तेरे पिता के रहते यह नौबत नही आई थी, लेकिन जब आई तो तेरी माँ का निशना अचूक रहा। जंगलिया की मौत के बाद कदमबाई के जीवन में मंसाराम रूपी आसना में राक्षस प्रकट हुआ। कदमबाई को अब कबूतरी बने रहने के सिवा कोई इच्छा नही। मंसाराम उसे शराब बनाने व बेचने तथा चोरी–चकारी नही करने की सलाह देता है, तो कदमबाई सचेत होकर जाग्रत स्वर में कहती है – यह न करूँ तो क्या करूँ मंसा माते ? तुम्हारा कच्चा दिल और पछतावे भरी आँख हमारी जिंदगी नही निभा पाएँगी। यह छलावे–बहकावे मै खूब समझती हूँ अब तक। इधर राधा चोरी–चकारी, तोता–मैना को गुलेल से मारने में संकोच करता व बिरादरी के लड़को के साथ चोरी करने नही जाता। उसे बार–बार तैयार किया जाता है, एक साथ चोरी करने जाने के लिए, लेकिन वह हर बार असफल हो जाता है, तब मालिया काका ने बच्चे राणा के ऊपर झुककर कहा तू–कुनबी, तू कबूतरा। तब कदमबाई कहती है – मालिया काका, मेरा बेटा कलंकी नही–उन्ही चाँदी–सोने के नर–नारी से जन्मा है जो शंकर महादेव ने भेजे थे। उस रात गेहूँ के पौधौ की हरियर सेज के ऊपर आसमान में तारे झमक रहे थे। बिरपा रोपा जा रहा था। रोपन वाला जंगलिया था न मंसा राम। धरती सी हरी भरी एक औरत थी, वह जिसका भी अंश साधना चाहती थी, साध लिया समय बताएगा वह बच्चा न कज्जा है न कबूतरा। आदमी है बस।

अंततः राणा के पढ़ने की ललक देखकर गाँव के स्कूल में मंसाराम की वजह से प्रवेश मिल जाता है। कदमबाई बेटे राणा की पढ़ाई लिखाई को देखकर अपने सारे दुखः भूल जाती है। राणा को खुश देखकर स्वयं झूम उठती है। किन्तु कदमबाई की खुशी ज्यादा दिन तक नही चलती है। स्कूल में बच्चों के साथ मास्टर भी राणा की जाति को लेकर अपमानित करते है। एक दिन राणा स्कूल से घर आ रहा था उसी रास्ते में मंसाराम का घर पडता है। मंसाराम की पत्नी आनंदी राणा पर कुत्ते से हमला करवाती है, जिसमे वह बुरी तरह घायल हो जाता है। तब कदमबाई यहाँ क्रोधित व जाग्रत स्वर स्पष्ट रूप से झलकता है – खुद मिटना मंजूर है उसे राणा की ओर कोई ऊँगली उठाएगा तो उसे काट देगी। इस तरह कदम खुद को जाग्रत कर कज्जा लोगो पर प्रहार करती है। गाँव के कज्जा लोग कभी नही चाहते कि कबूतरा जाति के लोग विद्याध्ययन कर शिक्षित बने। इसी कारण कबूतरा लोगो को शिक्षा से वंचित रखने के लिए उन्हे अपमानित व अत्याचार किया जाता है।

इस तरह मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास में कदमबाई के चरित्र में नारी–चेतना, नारी दृष्टी का परिचय प्राप्त होता है।

उपन्यास अल्माकबूतरी में तीसरी पीढी अविस्मरणीय पात्र और मील का पत्थर है, नायिका अल्मा कबूतरा जाति के जागरूक, सहासी भूरीबाई की पोती है, जिसके पिता रामसिंह कबूतरा जाति का एकमात्र पढ़ा–लिखा इंसान है जो मास्टर है। इसकी परवरिश पढ़े–लिखे कज्जा लोगो की बेटियों की तरह होती है, जिसमें अपनी दादी भूरीबाई कबूतरी की जाग्रत विचारधारा, साहस और अक्ल तथा रक्त है। अल्मा रानी पद्मिनी के समान अपने नाम के अनुरूप सुदंर है, जो निश्चित रूप से भूरी और कदम के आगे गाथा रचती है। इस अर्थ में उसका संघर्ष कबूतरा नारी की पीढीयों का संघर्ष है। इस संघर्ष की कोशिश उस स्थान पर ले जाती है जहाँ सत्ता में जाने के लिए राजनीतिक क्षेत्र में सहभाग उसका स्वागत करने में उत्सुक है, लेकिन यहाँ तक आने का मार्ग कठिन व संघर्षपूर्ण होता है। इस सफर में वह अपने बालपन में शोषित, बलात्कृत, अपमानित जीवन का दुखः भोगती है। वह सबसे पहले अपने मंगेतर राणा को खो देती है और अपने मित्र और चहते साथी धीरज की बर्बादी अपने आँखो से देखती है। अल्मा पिता की मृत्यु के बाद किसी वस्तु की तरह दुर्जनसिंह के पास गिरवी रख दी जाती है। दुर्जनसिंह उसके साथ बलात्कार कर उसे सूरजभान के पास बेच देता है। सूरजभान सत्ता का दलाल है जो अल्मा को अपनी हवस का शिकार बनाकर दूसरे नेता, अफसरो, के सामने पेश करने के लिए रखता है, लेकिन किसी तरह वह सूरजभान के चंगुल से भागने में वह सफल हो जाती है। इसमें उसका साथ धीरज देता है। अल्मा भागकर नत्थु के माध्यम से श्रीराम शास्त्री विधायक व समाज कल्याण मंत्री के घर पहुँच जाती है। यहाँ भी अल्मा संघर्ष करते हुई अपनी मंजिल की ओर बढ़ती है। अल्मा श्रीराम शास्त्री की पत्नी के रूप में स्वयं को समर्पित करती है। पढ़ी–लिखी अल्मा मंत्री के सभी कार्य को समझती व पूर्ण करती। यहाँ अल्मा की पढ़ाई काम आती है। वह श्रीराम शास्त्री के लिए भाषण लिखती है – लेकिन अंदर ही अंदर उसके मन में बदले की भावना उमड़ रही थी। वह कहती है कि मै यहाँ क्यों रूकी हुई हूँ ? आप समझते है कि मै जिंदा भी क्यों हूँ ? बड़ी सीधी बात है आप लोगो ने हमारी दुनिया उजाड़ी है, मै आपको उजाड़े बिना नही मरूंगी। मै सबको बता दूँगी की पाप कहा पलता है ? अपराध कौन लोग करते है? सताने और मारने वाले ठेकेदार कौन है? मेरे पिता ने इन्ही बातो से समझौता नही करना चाहा था, यही उनका गुनाह रहा। मै बहुत सचेत समझदार नही पर इतना तो समझती हूँ कि हमारे लिए क्या गलत है क्या सही। इस तरह अल्मा के दिन गुजर रहे थे कि एक दिन झाँसी के विश्रामगृह में मंत्री श्रीराम शास्त्री की गोली मारकर हत्या कर दी जाती है। अल्मा श्रीराम शास्त्री की पत्नी बनकर सभ्य समाज की रूढ़िवादी परंपराओ को दरकिनार करके मंत्र–ध्वनि के साथ श्रीराम शास्त्री की चंदन चिता को अग्नि समर्पित करती है, जो के नारी–चेतना को उजागर करता है और अल्मा श्रीराम शास्त्री की विधवा कहलाती है और उसकी उत्तराधिकारी बन जाती है। विधानसभा सीट के लिए सत्तारूढ़ पार्टी द्वारा छबीना विधानसभा सीट के लिए अल्मा को प्रत्याशी बनाया जाता है। अल्मा दुनिया के सामने श्रीराम शास्त्री की धर्मपत्नी होकर उसकी चिता को अग्नि देकर मानो परंपरा व रूढ़ियों को भस्मीभूत कर डालती है।

निष्कर्ष

कहते है कि घूरे के भी दिन फिरते है, यानी एक–न–एक दिन अच्छे दिन आ ही जाते है। मानव समाज में परिवर्तन तो होना ही है। मैत्रेयी पुष्पा का यह उपन्यास कबूतरा जनजातियों के दिन फिरने की पेशकश करता है। स्वतंत्र भारत में इन जनजातियों से अपराधी शब्द भले ही हटा लिया गया हो, किन्तु समाज के व्यवहारिक जीवन में आज भी ये तिरस्कृत है। इन्हे समाज की मुख्य धारा में जोड़ने का प्रयास भी नही हुआ। समाज में इन्हे रोजी रोजगार भी नही दिया, समाज मे सामने रोए, लाचार होकर हाथ फैलाए खड़े रहे, लेकिन बदले में इन्हे उपेक्षा मिली। गाँव, शहर के बाहर इन्हे आश्रय मिला। हारकर ये छोटी–मोटी चोरीयाँ करके शराब बनाकर पेट पालते है। इस प्रकार मैत्रेयी पुष्पा ने भूरीबाई, कदमबाई, और अल्मा जैसे आदिवासी नारी–जीवन की यंत्रणाओ को अपने उपन्यास में उजागर किया। कदमबाई आग का वह तिनका है जो कज्जा लोगो के खिलाफ प्रतिशोध के लिए लकड़ी के ढ़ेर में रख दी जाती है। आगे चलकर यह तिनका अल्मा के रूप में शोषको के सामने दहक उठाता है। भूरी, कदम और अल्मा जैसी बहादुर व चेतनशील नारियाँ जिनका जीवन शोषण व संघर्ष से गुजरता है, ये नारियाँ सत्ता व ताकत का महत्व जानती है। वे ताकत प्राप्त करने के लिए सचेत व कृतसंकल्प भी है। ये भी अपने जीवन में प्रगति देखना

चाहती है। उसी तरह सत्ता में काबिज हो, विकास की मुख्य धारा में आना चाहती है, जिस तरह संसार की अन्य जातियाँ है। वे संघर्ष की सीढी बनाकर व जागरूक होकर अपनी मंजिल तक पहुँचने वाली चेतनशील नारी बनती है।

संदर्भ सूची

1. डालमिया, दिनेश नंदिनी एंव मल्होत्रा, रश्मि, (2003), *नये आयामों को तलाशती नारी*, नवचेतन प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 103।
2. सिंह, वी.एन. एवं सिंह, जनमेजय, (2003), *नारीवाद*, रावत पब्लिकेशन, दिल्ली।
3. वही।
4. मैत्रेयी, पुष्पा, (2011), *अल्मा कबूतरी*, राजकमल प्रकाशन, तीसरी आवृति, पृ.74।
5. वही, पृ. 74।
6. वही, पृ. 37।
7. वही, पृ. 37।
8. वही, पृ. 35।
9. वही, पृ. 71।
10. वही, पृ. 370।

****